वर्षा रानी

अब तो बरसो -
वर्षा रानी !
तड़पें प्यास से -
नदी - कुएं ।
जलकर दिन भी -
अब हुए धुएं ।
फ़ुर्र हुआ -
उड़कर अब पानी ।
धरा की भी -
अब फटी छाती ।
झील हमें अब -
रोज़ रुलाती ।
सुबह न शामें -
रहीं सुहानी ।
मेघों के -
बगुले न उड़ाओ ।
कौए -
मेघों के भी लाओ ।
बरसो , काग़ज़ -
नाव बहानी ।
स्वागत में -
हम आज खड़े हैं ।
गर्मी - पहरे -
वही कड़े हैं ।
अग्नि - शमन -
तुम्हें बन जानी ।

अशोक आनन मक्सी

यादों की ताकत

यादों की ताकत
टूटी हुई साँसों में भी
रोशनी भर देती है
पुरानी मुस्कानों की तरह
बीते हुए पल
मन के कोने में चुपचाप
दीपक बन जलते हैं
अंधेरों के बीच
हर एक स्मृति
समय की धूल से ढककर भी
जिंदा रहती है
दिल की धड़कन में
कुछ चेहरे दूर होकर भी
पास महसूस होते हैं
जैसे हवा का स्पर्श
हर सुबह की तरह
यादें कमजोर नहीं होतीं
वे भीतर की ताकत बनकर
इंसान को चलना सिखाती हैं
हर टूटन के बाद भी

डॉ अशोक पटना बिहार

ऐ दई झाँझ

ऐसो के झाँझ
द्वार तरी माँझ
उत्ती ले झाँझ
बुडती ले झाँझ
मंझनिया के
झाँझ
चर बज्जी के झाँझ
हाय रे झाँझ
काय रे झाँझ
ऐ दई झाँझ।
मुछटी के झाँझ
बखरी के झाँझ
खेती के झाँझ
खार के झाँझ
तरिया के झाँझ
नरवा के झाँझ
खोर के झाँझ
झोर के झाँझ
हाय रे झाँझ
काय रे झाँझ
ऐ दई झाँझ।

नरेन्द्र नन्द राधिका नगर धमतरी, छत्तीसगढ़

कुछ सपने....

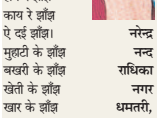

कुछ सपने भुलाने ही बेहतर ।
कुछ दर्द छुपाने ही बेहतर ।।
मतलब से जुड़े नए यारों से ।
कुछ यार पुराने ही बेहतर ।।
जो खोटे सिक्कों जैसे हों ।
वे यार गंवाने ही बेहतर ।।
बहते वक्त के दरिया से ।
कुछ लम्हे चुराने ही बेहतर।।
जहां पोंछने वाला कोई न हो ।
वहां अश्क छुपाने ही बेहतर ।।
इस पत्थर जैसी दुनिया में।
जज़्बात बचाने ही बेहतर ।।
नाजुक दिल की खुशी के लिए
कुछ नाज उठाने ही बेहतर।

अशोक दर्द डलहौजी चंबा हिमाचल प्रदेश

क्या कल तुम देख पाओगे

क्या कल तुम देख पाओगे?
जिस आज, अभी का पता नहीं।
गुज़रा हुआ वक़्त जो बीता नहीं,
ख़्वाबों में कहीं तो बंद है वह।
कुछ दोस्त, कुछ अपने,
कुछ पराए हैं साथ,
बंद मुट्ठी में छुपे हुए जज़्बात।
एक मकान, कुछ सामान,
कुछ रेत की तरह फिसलते अरमान।
कुछ तस्वीरें,
कुछ आधी-अधूरी कहानियाँ,
कुछ नए पड़ाव।
कुछ दम तोड़ती इच्छाएँ,
कुछ अधूरी जी गई ज़िंदगियों की
कड़वाहटें।
बहता हुआ कारवाँ,
समुद्र की गहराइयाँ नापती हुई ज़िंदगी।
आसपास का शोर,
और समय की घड़ी,
जो खुद से ही रूठी-सहमी बैठी है।
क्या कल तुम देख पाओगे?
अपनी इस आशा को फिर जगा
पाओगे?
अकेला सफर,
भीड़ में खो जाने का
डर–
क्या तुम सच में
कल को जी पाओगे?

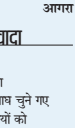

अनुपमा आर्य आगरा

राजा का वादा

कानन का नरेश शेर
हर बार चुना जाता था
किंतु इस बार राजा बाघ चुने गए
जिन्होंने सभी निवासियों को
खूब वादा किये जैसे
सुरक्षा की जिम्मेदारी
भोज की लाचारी
नाव की सवारी
बस दे दो दिन-चारी
दल-दल से होगी मुक्ति
स्वच्छता की चहुँ दिशा में युक्ति
चौकीदारों में सबकी नियुक्ति
पा गए सत्ता,जीत गए चुनाव
पर कई बरस बीत गये
स्थिति बद से बद्तर होने लगी
चीजें,शाकजीवी गुम होने लगी
सब कार्य प्रण-खिलाफ़ी दिखते
राजा ने सुरक्षा का वादा किया था
किंतु किससे सुरक्षा करनी है?
यह नहीं बताया था
वादे सभी रह गये धरे के धरे
वक्त-बेवक्त खुद ही शिकार करे।।

चन्द्रकांत खुंटे क्रांति जांजगीर चाम्पा (छत्तीसगढ़)

'होड़ लगी है'

होड़ लगी आज जन-जन में है
आपा -धापी आगे बढ़ने की
एक दूजे की टांग खींच कर
ऊंचे शिखर पर चढ़ने की ।
हुनर भी ना कुछ पास है उनके
चोरी कर- कर कविता गढ़ते
शान से जाके मंच पे चढ़कर
हंस-हंसकर फिर कविता पढ़ते
लज्जा तनिक ना उन्हें है आती
बेशर्मी से करते चौड़ी छाती
खुद को लेखक,कवि समझते
भेड़ की झुंड में शान से चलते ।
एक सम्मान पत्र के चलते
बात-बात पर खूब झगड़ते
पता नहीं सम्मान का मतलब
फिर भी गला फाड़-फाड़ लड़ते
खुद की बड़ाई खुद ही करते
मेंढक सा पटलों पर उछलते
सच को पैरों तले कुचलकर
चापलूसों को गले लगाते ।
खुद ही नियम लाख बनाते
पर उस पर खुद कभी ना चलते
औरों को बड़ा देते हैं ज्ञान
खुद कभी ना लेते संज्ञान ।
ऐसी होड़ लगी जन -जन में
बसा झूठ इनके ही मन में
किसे गिराकर खुद उठ जाऊं
ऐसे भाव भरे कुछ जन
में । ।

डॉ. संजुला सिंह 'संजू ' जमशेदपुर

गुड़िया रानी

झील सी नयन नटखटी गुड़िया रानी,
आंखों का तारा बनी बिटिया लाड़ली।
घर आंगन महकाने आई बिटिया प्यारी,
दिल का टुकड़ा कहलाई बिटिया दुलारी।
चांद की चांदनी से दिखती बिटिया न्यारी,
फूलों की तरह खिल उठे जीवन हमारी।
जीवन की बगिया में जब आई नन्ही कली,
खिल उठा घर आंगन धन्य हुई जीवन सारी।
पिता के कलेजा का टुकड़ा बनी मां की परछाई,
पिता के गोदी में खेलती मां के आंचल में छुपती।
शान बनके पापा के मां की कहलाती लाडली,
आई जब से बिटिया रानी घर की बगिया महकाई।
जीवन खिल उठा जब सुनी बिटिया की किलकारी,
बिटिया रानी के आने से घर परिवार आई खुशहाली।
चौखट पे पांव पड़े बिटिया के हर्ष उल्लास सबने मनाई,
ढोल नगाड़े बाजे पटाखे जश्नों के साथ बटी मिठाई।
गुड़िया रानी मीठी मीठी मुस्कान भर के वह मुस्कुराती,
हर दुख दर्द चली जाती जब गुड़िया पापा का कर
पुकारती।
दादा दादी का हाथ थामे भाई का बनी कलाई,
जिस घर में बिटिया आई वह घर को स्वर्ग बनाई।

नरेश कुमार दुबे सरायपाली छत्तीसगढ़

यहाँ अपने ही सायों से भागते लोग

क्यों अब सच का साथ नहीं देते लोग,
झूठ की परछाई के पीछे भागते लोग।
चेहरों पर ईमान का पानी भी सूख गया
अंदर-अंदर नफ़रत रोज़ उपजाते लोग।
रिश्तों की शाखों पर सूखे पत्ते ठहरे,
मजहबी पर्दों से अब घर बाँटते लोग।
थोड़ी शोहरत क्या हाथ आ लगी,
अपनों को ही आंखें दिखाते लोग।
भीड़ में रहकर भी अब तन्हा है सब
अपनी ही आवाज़ से आज डरते लोग।
सच की राहों पर कंटि ही कंटि निकले,
झूठ के मेले में अब खुशियाँ बाँटते लोग।
दिल की बातों को पढ़ने की फ़ुर्सत कहां
चेहरों की भाषा से मतलब साधते लोग।
संजीव अब किससे गिला शिकवा
यहाँ अपने ही सायों से भागते लोग।

संजीव ठाकुर रायपुर छत्तीसगढ़ 9009 415 415,

चाय और यादें

एक खाली कप, और उसमें गिरती, खौलती यादें..
चाय की पत्तियाँ–
सूखे, मुरझाए हुए अतीत के वो पन्ने,
जो उबलते-खौलते पानी के स्पर्श से
अचानक
अपना रंग, अपनी महक और अपना ज़ायका..
अपने गुजरे वक़्त का हर हिस्सा
छोड़ देते हैं वर्तमान में।
भाप बनकर उड़ता है समय,
ठीक वैसे ही,
जैसे कोई गहरा ख़याल,
मन की सतह से उठकर विलीन हो जाता है
अनंत शून्य में।
यह सिर्फ पीना भर नहीं है
एक पेय का,
यह एक ध्यान है,
एक मौन बहाना,
स्वयं से, स्वयं के अतीत की मुलाक़ात का ।
पहला घूंट–

हमेशा थोड़ा तीखा, थोड़ा कड़वा लगता है,
बिल्कुल उस नग्न सत्य की तरह,
जिसे हम जरा भी याद करना नहीं चाहते
और जो हमें जरा भी नहीं भूलता
जो अक्सर हमें
सबसे पहले याद आता है।
पर फिर...
यादों की हल्की-सी मिठास का एक सिलसिला,
घुल जाता है ज़बान पर,
हर घूंट के साथ,
दूसरे, तीसरे और बाद वाले हर घूंट के साथ
दूसरी, तीसरी और बाद वाली हर याद
जो वक़्त की धुंधली तस्वीरों में
पीछे छूट गयी थी कहीं ।
जब हम चाय पीते हैं
तो हम धीरे-धीरे पीते हैं वह वक़्त,
जो अब कभी लौटकर नहीं आएगा
बीत गया है जो ।
हर खत्म होती चाय की प्याली के साथ,
हम थोड़ा सा अतीत
सोख लेते हैं अपने भीतर,
और अपनी बची हुई ज़िंदगी की चंद बूंदें ...
छोड़ देते हैं प्याले में
अगली चाय के इंतजार में ।

वीरेन्द्र राय
मोबाइल नंबर : 9160632747

नवा घर के सपना

नवा घर बनाए म, कतका मेहनत लगथे,
दिन-रात के पसीना, ईंट म चमकथे।
कोई देखे दीवार, कोई रंग ला सराहे,

भीतर के संघर्ष ला, कमे मनखे जान पाथे।
रेती, गिट्टी, सीमेंट म जिनगी घुल जाथे,
एक-एक कोठा बर बरसों कमई लग जाथे।
धूप म जलके घलो, मनखे मुस्काथे,

अपन घर के सपना म, हर दुख भुलाथे।
कर्जा के बोझा घलो, हँस-हँस के ढोथे,
लइका मन के भविष्य बर, चिंता ला खोथे।
छत बनथे तब जाके, चैन के नींद आवय,
नवा घर के खुशबू, मन ला गजब सुहावय।

सिरफि दीवार नई ए, मया के संसार आय,
गरीब मनखे बर त, ए सपना अवतार आय।

दयाराम साहू
ग्राम-डौकाबांधा (छत्तीसगढ़)

ईद का पैगाम : मोहब्बत और एकता के नाम

ईद की चाँदनी जब नभ में मुस्काती है,
हर दिल में प्रेम की शमा जगाती है।
नफरत की दीवारें खुद-ब-खुद ढह जाती हैं,
जब इंसानियत की राहें गले मिल जाती हैं।
मंदिर की घंटी हो या मस्जिद की अज़ान,
दोनों में बसता है एक ही भगवान।
नाम भले हों अलग-अलग इस संसार में,
एक ही रब बसता है सबके प्यार में।
रंग अलग, भाषा अलग, अलग हों रीति-रिवाज़,
फिर भी एक धड़कन है, एक ही है अंदाज़।
हिंदू हो या मुस्लिम, सब भारत की शान,
मिल-जुलकर बढ़ता है अपने देश का मान।
सेवइयों की मिठास में प्रेम घुला रहता है,
रिश्तों का हर धागा और मजबूत बनता है।
ईद का त्योहार यही संदेश सुनाता है,
हर दिल को हर दिल से जोड़ता जाता है।
आओ मिलकर आज नया इतिहास रचें,
भेदभाव और कटुता के बादल दूर करें।
प्रेम, सद्भाव और विश्वास के दीप जलाएँ,
भारत माँ के आँगन को खुशियों से सजाएँ।
न मंदिर छोटा हो, न मस्जिद बड़ी हो,
हर इंसान की बस दिल में जगह पड़ी हो।
जहाँ मोहब्बत की फसलें हर मौसम लहलहाएँ,
ऐसा भारत हम सब मिलकर बनाएँ।
ईद का यह पर्व हमें यही सिखाता है,
सच्चा धर्म इंसानियत कहलाता है।
हाथों में हाथ लेकर आगे बढ़ते जाएँ,
हिंदू-मुस्लिम एकता का परचम लहराएँ।
ईद मुबारक !

प्रेम, भाईचारे और राष्ट्रीय
एकता का यह संदेश
हर घर, हर दिल और पूरे
देश में सदैव गूँजता रहे।

सत्य भूषण शर्मा उदयपुर, राजस्थान

दोहा मुक्तक

जीवन में अवरोध का, होता बड़ा प्रभाव।
इससे करना मत कभी, मित्रों आप दुराव।
प्रेम प्यार भी दीजिए, चाह रहा अवरोध -
अड़ जाता ये राह में, रखे दूर हर घाव।।
अंधे की लाठी रहा, आज समझता भार।
धन दौलत लालच भरे, टपकाता बस लार।
कहें मित्र यमराज, दृश्य रहा दिख रोज-
अब बूढ़े माँ- बाप ने, समझा जीवन सार।।
करता कोई घात यदि, आप करो प्रतिघात।
मान लीजिए मित्रवर, तभी बनेगी बात।।
समय नहीं है आज का, बैठो रखकर हाथ-
आज दौर ऐसा हुआ, पहले मुक्का लात।।
पैरों में बिखरे पड़े, सपने जो थे यार।
खाते हम सब मार हैं, बनकर के लाचार।
समझ नहीं हम पा रहे, क्या ये है संयोग-
या किस्मत के संग में, ठनी हुई है रार।।
राष्ट्रगान होता जहाँ, छा जाते टैगोर।
इतने वर्षों बाद भी, बने हुए सिरमौर।
नाम रवींदर नाथ था, कहता है यह देश-
भारतवासी मानते, मिलता ऊर्जा सौर।।
सर्वोपरि है राष्ट्र हित, यह हम सबको ध्यान।
पर ऐसे कुछ लोग भी, बने हुए अज्ञान।।
होती है पीड़ा बड़ी, जब हो धर्म विवाद-
बड़ा देश से कब भला, होती निज
पहचान।।
कविता तो सब लिख रहे, करते नहीं
विचार।
कुछ भी लिखते नित्य हैं, बिना किसी
आधार।।
बस घमंड में चूर हैं, बनकर घूमें श्रेष्ठ -
लोग खूब चर्चा करें, नहीं लेश संस्कार।।

सुधीर श्रीवास्तव गोण्डा उत्तर प्रदेश

बेरोजगार हूँ साहब

बेरोजगार हूँ साहब ! मै बेईमान तो नहीं
दिल में मेरे हजारों अरमान तो नहीं..!!
नौकरी सबूत नहीं है अच्छे इंसान होने का
इंसान हूँ मैं इंसानों से अलग तो नहीं..!!
अपनी जिंदगी कि मैं लड़ाई लड़ रहा हूँ
सपनों के लिए बस आशियाना बुन रहा हूँ..!!
अपनों से गीला नहीं गैरो से शिकवा नहीं

रोजगार की तलाश में दर-दर भटक रहा हूँ..!!
भविष्य की चिंता मुझे सताती है हरपल
जख्म मेरे रोज नए हो जाते है पल पल..!!
सहम सा जाता हूँ लोगों का सवाल सुनकर
ना पूछा कर क्या कर रहा है आज कल ?
ना देश लूट रहा हूँ, ना देश चला रहा हूँ

ना हत्या कर रहा हूँ, ना फरेब कर रहा हूँ..!!
ना कोई गुनाह किया हूँ, ना गुनहगार हूँ
रोजगार की तलाश करता मैं बेरोजगार हूँ..!!
आखिर ये सवाल क्यों पूछते है लोग मुझसे
क्या रिश्ता है जमाने में उनका और मुझसे..!!
अपने हिस्से की लड़ाई दिन रात लड़ रहा हूँ

बेरोजगार हूँ रोजगार की
तलाश कर रहा हूँ..!!

प्रीतम कुमार साहू, लिमतरा,धमतरी (छ.ग)

तिहाड़ी मजदूर

धमतरी का मकई चौक
कौन नहीं जानता...?
वहाँ रोज सुबह लगता मेला
जी हाँ, रोजगार का मेला
भिनभिनाती मधुमखियों की भांति
शहर के इर्दगिर्द बसे गांव
कस्बों और देहात से आते
तिहाड़ी मजदूर...
खाने की पोटली साथ लिए
साइकिल पर सवार हो
या फिर पैदल...
आपस में गपियाते बतियाते
बड़ी ही आत्मीयता से...
उनकी नजरें तलाशती रहती
जो उन्हें खरीदना चाहते
दिन भर की रोजी रेकर
ताकि महंगाई के जमाने में भी
जल सके उनका चूल्हा और
चल सके रोजीरोटी...
शहर के लोग आते
काम समझाते... और तभी
भीड़ में से कई हाथ उठने लगते
मोलभाव भी होते और फिर
चल पड़ते गंतव्य की ओर
काम करते करते थकते हाथ
छूटते पसीने ... लगती प्यास
पानी पीते ही बुझ जाती प्यास
मगर भूख...? अभी कहाँ..??
घड़ी इजाजत दे तब न...?
हिम्मत जुटाते... जोर लगाते
घड़ी इशारा करते ही
मुस्कान खिलती चेहरे पर
पपड़ाए होंठ धनुष बनते
आँखों में खुशी तैरती
पोटली खोलते गोल बैठते
खुशबू तैरती पूछते-बताते
कभी इडहर... कभी सलगा बड़ा
कभी करमता भाजी तो कभी
जिमी कांदा चटनी बासी
आपस में बांटते खाते सुस्ताते...
घड़ी की सूई से कहते, 'धीरे चल '
फिर लग जाते काम पर
शाम ढलते कहते सूई से...
चल जल्दी-2 चल... लेकिन
घड़ी कब कहाँ किसकी सुनी है?
सूरज की उंगली थाम लौटते घर
लेट जाते टूटी खाट पर
गहरी नींद की आगोश में समाते

'कल की बात कल
देखी जाएगी...

'कृष्ण कुमार अजनबी

जेठ की दुपहरी में

सड़क किनारे
पसीने से तर एक बुड्ढा
लाठी टेकते हुए चल रहा है,
और डेरे के पास
देवार का निर्वस्त्र बच्चा
आम की गुठली को चिथोड़ रहा है,

आम की दुपहरी में।
कपोत के जोड़े
मुँडेर के ठीक नीचे
पँखें समेटे बैठे हैं।
बेचारी मुर्गी घर की अटारी पर
अपने डैने को फैला कर,
मुँह खोल कर हाँफ रही है,

जेठ की दुपहरी में।
जुड़े से विलग होकर
रामदीन का भैंसा
लम्बी-लम्बी साँसें छोड़ता
पोखर के कीचड़ में
अपनी उष्ण-देह को
तनिक तर करने के प्रयास में
बार-बार उलंड रहा है,
जेठ की दुपहरी में।

घोघें, मछली, जोंक,
दादुर, केकड़ा, साँप जैसे
और अन्य जीव-जंतुएँ
जलते नीर में नीर बहा रहे हैं,
जेठ की दुपहरी में।
ठहर नहीं पाती हैं
तरुवर की सूखी पत्तियाँ,

लाल हो गयी हैं
खम्भों की विद्युत तारें,
कागज के टुकड़े
व तिनके धूल के साथ चिंदियाँ
उड़ रही हैं और
बीच सड़क में कोलतार पिघल रहा
है,
जेठ की दुपहरी में।

टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला

राजस्थानी अर्ज : म्हाने सुगरा री संगत दीजे

हाथी दीज्ये घोडा दीजै, गधा गधेडी मत दीजै
सुगरां री संगत दे दीजै, नशा नशैडी मत दीजै
घर दीजै घरवाली दीजै, खींचातापाणीं मत दीजै
जूणं बलद री दे दीजे, तेली री घाणीं मत दीजै
काजल दीजै टीकी दीजै, पोडर वोडर मत दीजै
पतली नार पदमणीं दीजै, तूं बुलडोजर मत दीजै
टाबर दीजै टींगर दीजै, बगनां बोगा मत दीजै
जोगो एक देय दीजै पणं, दो नांजोगा मत दीजै
भारत री मुद्रा दै दीजै, डालर वालर मत दीजै
कामेतणं घर वाली दीजै, ब्यूटी पालर मत दीजै
कैंसर वैंसर मत दीजै, तूं दिल का दौरा दे दीजै
जीणों दौरो धिक ज्यावेला, मरणां सौरा दे दीजै
नेता और मिनिस्टर दीजै, भ्रष्टाचारी मत दीजै
भारत मां री सेवा दीजै, तूं गद्दारी मत दीजै
भागवत री भगती दीजै, रामायण गीता दीजै
नर में तूं नारायण दीजै, नारी में सीता दीजै
मंदिर दीजै मस्जिद दीजै, दंगा रेला मत दीजै
हाथां में हुन्नर दे दीजै, तूं हथगोला मत दीजै
दया धरम री पूंजी दीजै, वाणी में सुरसत दीजै
भजन करणं री खातर दाता, थौडी तूं फुरसत दीजै
घी में गच गच मत दीजै, तूं लूखी सूखी दे दीजै
मरती बेल्यां महर करीज्यै, लकड्यां सूखी दे दीजै
गर्ग! कवि ने मत दीजै, कविता नें इज्जत दीजै
रावत जिवूं जत्रा तक लिखतो, रेवूं इतरी तूं हिम्मत दीजै।।

(गुरू) सुबेदार रावत गर्ग उण्डू (राज) श्री हरि विष्णु कृपा, श्री गर्गवास राजबेरा, राजस्थान

कब की वो आवाज

कब्र से आई आवाज़, पूछ रही थी हिसाब,
ज़िंदा थे जो, वो क्यों बने लाशों के जवाब।
चीख़ रही थी मिट्टी, 'किसने मुझको रौंदा था?
मैंने तो सबको ओढ़ा, तुमने क्या-क्या खोया था?'
वो बोली, 'मैंने राजा देखे, रंक भी देखे,
सोने के ताजों में छिपे कलंक भी देखे।
तुम जो आए खाली हाथ, गए भी खाली हाथ,
फिर किस बात का घमंड, किस बात की बरसात?'
वोटों की खातिर जो नारे तुमने बोये थे,
वो सब मेरे सीने में आकर सोये थे।
धर्म के नाम पर जो दीवारें तुमने चिनीं,
उन ईंटों के नीचे कितनी साँसें दबीं?
मैं कब्र हूँ, घर अधी नहीं, सब देखती हूँ,
तुम्हारी संसद के झूठ भी रोज़ लेखती हूँ।
जो कुर्सी के लिए भाई का लहू पी गया,
वो भी आख़िर में मेरे ही आगोश में जी गया।
चीख़ रही हूँ मैं नहीं, चीख़ रहा है वक़्त,
कि ज़िंदा होकर भी तुम बन गए सख़्त।
मुझसे डरते हो क्यों? मैं तो बस आईना हूँ,
तुमने जो खोया है, वो ज़मीर का ख़ज़ाना हूँ।
सुनो, अभी भी वक़्त है, लौट चलो इंसान की ओर,
वरना अगली चीख़ तुम्हारी होगी, इस मिट्टी के छोर।
बोझ कौन ....?
कुवारी हो या बिराही, लड़की बोझ कब बनी?
जब रीति ने तोला उसे, सिक्कों में तब गिनी।
जन्मी तो माथे पर चिंता की लकीर खिंची,
''पराया धन है' कहकर, किसने ये तक़दीर लिखी?
कुवारी है तो डर कि कहीं दाग़ न लग जाए,
दहेज की मंडी में बोली उसकी कम न रह जाए।
पढ़े-लिखे तो कहेंगे, 'हाथ से निकल जाएगी',
अनपढ़ रखो तो दुनिया उसे निगल जाएगी।
ब्याह दी तो बोझ कहाँ कम हुआ बता,
मायके से ससुराल तक, बस पता बदला।
वहाँ भी सुने, 'कमा कर क्या लाई है?'
यहाँ भी ताना, 'बेटा क्यों न जाई है?'
जो घर को जोड़े, वही घर पर बोझ कैसी?
जो पीढ़ी को जन्मे, वो रीति की सोच ऐसी।
बोझ तो वो रस्मों है जो उसे बाँधती हैं,
बोझ वो नज़रें हैं जो हर क़दम नापती हैं।
लड़की बोझ नहीं, बोझ है ये बीमार ख़याल,
जो कहता है बेटी नहीं, बेटा ही कमाल।
जिस दिन उसे इंसान समझ लोगे पूरे तौर,
उस दिन न कुँवारी बोझ, न ब्याही का शोर।

पुतुल दास आलिपुरद्वार ,पश्चिम बंगाल

लोकतंत्र है भाई साहब

लोकतंत्र है भाई साहब
सब कुछ यहां बिकती है
पैसा हो तो कोर्ट खरीदो
न्याय यहां खूब बिकती है
बड़े -बड़े वकील यहां हैं
कीमत है उनकी बहुत बड़ी
पैसों का बस करो व्यवस्था
अपराध चाहे हों कितनों भी घटिया
सजा नहीं हो सकती है
लोकतंत्र है भाई साहब
सब कुछ यहां बिकती है।
और भी ज्यादा पैसा हो तो
कुदो चुनावी जंग में
टिकट खरीदो वोट भी खरीदो
हाथ जोड़ने का आदत डालो
दारू, मूर्गा का खुब पार्टी कर दो
बोलना सीखो नफरत की भाषा
शर्म ना करो,करो खुब वादा
बस खरीदने की औकात बना लो
फिर देखो,क्या यहां नहीं बिकती है!
लोकतंत्र है भाई साहब
सब कुछ यहां बिकती है।
डाक्टर बनो आफिसर बनो
चो चाहो बो बन जाओ
पेपर खरीदो स्कालर खरीदो
ना बने बात तो कोटा खरीदो
सब कुछ यहां बिकती है
लोकतंत्र है भाई साहब
सब कुछ यहां बिकती है।
भुल कर भी आदर्शों में न फंसना
लोग देंगे दुहाई तुम बस सुनना
हम पर तुम विश्वास मत करो
देखो आसपास और तुम सोचो
कहो,बिकती है कि नहीं बिकती है
ईमान भी यहां बिकती है
लोकतंत्र है भाई साहब
सब कुछ यहां बिकती है।
पैसा ही अब सब-कुछ है
नैतिकता वाले तो सबसे तुच्छ है
बस करो उपाय पैसा अर्जन का
कोई मूल्य नहीं बिन पैसे का
पैसा ही भगवान गढ़ा है
पैसे वाले सबसे बड़ा है
सारा सुख पैसा देती है
लोकतंत्र है भाई साहब
सब कुछ यहां बिकती है।

राजीव, गाजियाबाद

तावड़ो लेली लार

तातो तातो बायरो , तपती पड़े अपार ।
पावका पावका टापरा , ताता हुवे अबार ।।
पाणी का फोड़ा पड़े , पड़े खर्रो भार ।
काम काज होवे नहीं, किकर पड़सी पार ।
दिन उगतां सूरज तपे , होवे उमस अपार ।
बळती तो बळती सुखा , तावड़ो लेली लार
रेया नीं अब रूंखड़ा , ठण्डी छायादार ।
नहीं खुला अब टापरा , नहीं रिया तीबार ।।
नहीं लगावौं रूंखड़ा , काट्या बारम्बार ।
किन देयो अब ओळबो , खुद हौं जिम्मेदार ।।

सुखदेव रिक्त (कवि) निम्बी जोधाँ,लाडनूं,राजस्थान